

गुरुमाई चिद्विलासानन्द द्वारा लिखित पुस्तक

अन्तर-शुद्धि के सोपान

उद्धरण २६

ज्ञान कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो केवल तुम्हारे मस्तिष्क में समाया रहता है और तुम्हारे सिर को गुब्बारे की तरह फुलाता चला जाता है। तुम्हारे रोम-रोम का महत्त्व है। तुम्हारे शरीर का हर कोषाणु महत्त्वपूर्ण है। तुम्हें जो भी महसूस होता है, तुम जो भी करते हो, उसका महत्त्व है। जब तुम्हारा ज्ञान शुद्ध होता है तो तुम अपनी सत्ता के गहनतम भाग से कार्य-व्यवहार कर रहे होते हो, उस महान हृदय से जहाँ सत्य का निवास है।



© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

गुरुमाई चिद्विलासानन्द, अन्तर-शुद्धि के सोपान : दिव्य सद्गुणों का योग अध्याय ४ “ज्ञान में दृढ़ता,” से उद्धृत
[चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१३], पृ. ५७।